# इकाई 7 यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियाँ

**इकाई की रूपरेखा**



## 7.0 उद्देश्य

इस इकाई में यूरोपीय शक्तियों की पारसमुद्रीय गतिविधियों (खासकर एशिया और भारत के परिप्रेक्ष्य में) की चर्चा की जा रही है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यूरोपीय देशों के व्यापार और फैलाव तथा व्यापारिक कम्पनियों की स्थापना पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- पूरब में पुर्तगालियों, डचों, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के व्यापारिक साम्राज्य के विकास की कहानी कह सकेंगे,
- विश्व स्तर पर होने वाले पूंजीवादी विकास के परिप्रेक्ष्य में पूरब के साथ होने वाले व्यापार के स्वरूप और तरीके को रेखांकित कर सकेंगे,
- यूरोपवासियों के व्यापारी से औपनिवेशिक शक्ति के रूप में रूपांतरित होने का वर्णन कर सकेंगे, और
- यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों की व्यापारिक दुश्मनी और भारत में फ्रेंच और अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की विजय को निरुपित कर सकेंगे।

## 7.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने यूरोप में पन्द्रहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक होने वाले बदलावों की परीक्षा की। इस काल में व्यापार और बाजार का तेजी से फैलाव हुआ और कृषि तथा उत्पादन क्षेत्र में नयी तकनीकों का प्रयोग शुरू हुआ। सामंती अर्थव्यवस्था और समाज का स्थान पूंजीवाद ले रहा था। इस परिवर्तन का असर यूरोप तक ही सीमित नहीं रहा। 1500 ई. के बाद विश्व इतिहास यूरोप में होने वाले परिवर्तनों से पट गया। इसका कारण यह था कि पूंजीवाद मुनाफा और प्रतिद्वंद्विता पर आधारित होता है। इसमें बाजार में मुनाफा कमाने की होड़ मच जाती है। यह व्यवस्था कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार माल को बेचने के लिए बराबर बाजार खोजती रहती है। इसके जरिए पूंजी एकत्रित होती है, जिसे मुनाफा कमाने के लिए पुन: निवेशित किया जाता है। अत: इसका प्रसार विश्व भर में हुआ, जिसने पूर्ववर्ती अर्थव्यवस्थाओं, समाजों और संस्कृतियों को समाप्त कर दिया।

## 7.2 पृष्ठभूमि

पन्द्रहवीं शताब्दी के बाद यूरोप में महत्वपूर्ण बदलाव आये, ऐसा अन्य देशों के साथ उनके सम्पर्क के कारण हुआ। पर इसका यह अर्थ नहीं है कि इसके पूर्व अन्य संस्कृतियों से उनका सम्पर्क ही नहीं था। भारत का यूनानियों और रोमन साम्राज्य से ई.पू. की शताब्दियों से ही सम्पर्क स्थापित था। यूरोप के लोगों का चीन और अन्य एशियाई देशों से पुराना संबंध था और यह संबंध पूरे मध्यकाल में कायम रहा। आपने मार्को पोलो (लगभग सन् 1254-1324 ई.) का नाम अवश्य सुना होगा। उसने चीन की यात्रा की थी और अपने रोमांचकारी किस्सों से यूरोपवासियों को प्रभावित किया था। पूर्व की समृद्धि की कहानियों ने यूरोपवासियों की इच्छा को और जाग्रत कर दिया।

बारहवीं शताब्दी से इटली ने पूरब के व्यापार पर अन्य यूरोपीय देशों के मुकाबले में लगभग एकाधिकार जमा रखा था। दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत के साथ समुद्री और थल मार्गों से व्यापार होता था। एक रास्ते से पूरब का सामान फारस की खाड़ी होता हुआ इराक और तुर्की आता था। वहाँ से भू-मार्ग के जरिए सामान जेनेवा और वेनिस पहुँचता था। एक दूसरे रास्ते के जरिए लाल सागर होते हुए सामान मिश्र के अलेक्जेंड्रिया तक पहुँचता था। चूँकि उस समय तक कोई स्वेज नहर जैसी चीज नहीं थी, अत: अलेक्जेंड्रिया से भूमध्य सागर होते हुए यह सामान इटली के शहरों में पहुँचता था। एक दूसरा रास्ता (थल मार्ग), जिसका उपयोग कम होता था, मध्य एशिया के उत्तर-पश्चिमी के दर्रों, से होता हुआ रूस और बाल्टिक तक पहुँचता था।

## 7.3 अफ्रीका और अमेरिका की ओर

पन्द्रहवीं शताब्दी से ही अतलांतिक तट पर बसे देशों ने वैकल्पिक समुद्री रास्ते की खोज शुरू कर दी थी। पुर्तगालियों ने यह प्रयत्न अफ्रीका के पश्चिमी तट से शुरू किया। जैसा कि हम इसके पहले वाली इकाई में पढ़ चुके हैं, धर्म, इटली के साथ प्रतिद्वंद्विता और पुनर्जागरण से उत्पन्न रोमांच और खोज की भावना ने खोजियों को प्रोत्साहित किया। इस दिशा में प्रयत्न और तेज हुए जब 1453 में ऑटोमन तुर्क ने कौंस्टैंटीनोपल पर कब्जा करके थल मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। पूरब के मसाले और अन्य वस्तुओं के व्यापार को पुनः स्थापित करने की कोशिशें होने लगीं। पुर्तगालियों और स्पेनवासियों ने इस दिशा में प्रयत्न शुरू किया। इस प्रयत्न के फलस्वरूप सोलहवीं शताब्दी के मध्य में न केवल भारत जाने के लिए नये समुद्री रास्ते की खोज की गयी बल्कि एक नये महाद्वीप की खोज की गयी और उसे उपनिवेश बनाया गया। विश्व के कई देशों पर यूरोपीय आक्रमण होने लगे और अठारहवीं शताब्दी के अंत तक यूरोपीय देशों ने विश्व की आधे से अधिक भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया और कम से कम एक तिहाई भूमि को अपने वास्तविक नियंत्रण में ले लिया। अतलांतिक के पार स्पेन और पुर्तगाल ने दक्षिण अमेरिका पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और उत्तरी अमेरिका में यूरोप के विभिन्न देशों के लोग बसने लगे। 1776 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका नामक देश का उदय हुआ, जो पहले ब्रिटिश साम्राज्य का अंग था। कैरिबियन द्वीपों के उत्तरी और दक्षिण हिस्सों को स्पेन, फ्रांस और ब्रिटेन ने अपने बीच बाँट लिया।

अमेरिका महादेश को अधीनस्थ करके और उसे अपना उपनिवेश बनाकर यूरोपीय शक्तियों ने खूब मुनाफा कमाया। ये उपनिवेश औपनिवेशिक शक्तियों का मातहत अंग बन गये और उनका असन्तुलित विकास हुआ। इतिहासकार आन्द्रे गुंडर फैंक के अनुसार, जहाँ एक ओर यूरोपीय शक्तियाँ तेजी से विकास कर रही थीं, वहीं उपनिवेशों में "अविकास का विकास" हो रहा था। स्पेनवासियों ने दक्षिण अमेरिका में अपनी संस्कृतियों (इनकासैंड और एजटेक) को नष्ट कर दिया। बागानों में दासों का उपयोग उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था का अंग बन गया। चीनी, कपास और तम्बाकू की खेती के लिए और अमेरिका के खानों के लिए सस्ते मजदूर उपलब्ध हो गये। ये मजदूर नारकीय जीवन बिताते थे। मोटे तौर पर अनुमान किया जाता है कि 1 करोड़ 50 लाख से 5 करोड़ अफ्रीका वासियों को यहाँ दास के रूप में लाया गया। दूसरी तरफ यूरोप यहाँ होने वाले उपज, जैसे कोको, टमाटर, बाजरा, बीज, मिर्च और तम्बाकू से खूब मुनाफा कमा रहे थे। 1538 ई. में

स्पेन के एक सैनिक पेड्रो दे सियेजा दे लिओन ने कोलंबिया की साउका घाटी में आलू का पता लगाया। 1588 में उत्सुकतावश यूरोप में इसकी खेती शुरू हुई। अठारहवीं शताब्दी के दौरान मक्के के साथ आलू यूरोप की बढ़ती आबादी के लिए वरदान सिद्ध हुआ। इससे खाद्यान्न समस्या भी हल हुई और बार-बार आने वाली अकाल की समस्या का भी अंत हुआ। इसके अतिरिक्त बुलियन (सोना-चाँदी) की प्राप्ति ने प्रत्यक्ष रूप से यूरोप को समृद्ध किया। इससे यूरोप को धन और पूंजी प्राप्त हुई जिसे उत्पादन, व्यापार और युद्ध में लगाया गया। यूरोप के साथ एशिया के होने वाले व्यापार पर इन सब बातों का असर पड़ा।

## 7.4 एशिया की ओर : पुर्तगाली आक्रमण

पश्चिम में अमेरिका के विपरीत, पूरब में यूरोपीय शक्तियाँ सीधे उपनिवेशीकरण से श्रीगणेश न कर सकीं। राज्य क्षेत्रों पर अधिकार जमाने में उन्हें कुछ समय मिला पर अपनी विकसित समुद्री ताकत, तकनीक और अस्त्र (खासकर बारूद) के कारण उन्होंने शीघ्रता से समुद्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। 1513 में पुर्तगाल के जहाज के एक कप्तान ने गर्व के साथ अपने राजा को लिखा "हमारे आने की अफवाह सुनते ही देशी जहाज लुप्त हो जाते हैं, यहाँ तक कि पक्षी भी पानी के ऊपर उड़ना बंद कर देते हैं।"

जब केप ऑफ गुड होप होकर वास्कोडिगामा कालिकट पहुँचा तब तक भारत के साथ यूरोप के व्यापारिक संबंध का एक नया अध्याय शुरू हुआ। लिसब से कालिकट की यात्रा दस महीने और चौदह दिनों में पूरी की गयी। पुर्तगालियों ने अपनी मंशा शुरू में ही स्पष्ट कर दी कि वे ईसाई मत और मसाले के कारण भारत आये थे। उन्होंने निश्चित रूप से अपना दूसरा उद्देश्य पूरा किया और वास्कोडिगामा ने इस दौर में अपनी यात्रा खर्च का साठ गुना मुनाफा कमाया।

उस समय तक हिन्द महासागर के व्यापार पर अरब व्यापारियों का एकाधिकार था। अगले पन्द्रह वर्षों में पुर्तगालियों ने अरब नौपोतों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। उन्होंने उनके जहाजों को लूटा, उन पर आक्रमण किए, जहाजियों को मारा और अन्य दमनात्मक कार्यवाइयाँ कीं। वहाँ के राजा मैनुएल प्रथम ने तुरंत 1501 ई. में अपने को "आक्रमण, नौपोतों, और एथोपिया, अरब, फारस और भारत के साथ व्यापार का मालिक" घोषित कर दिया।

पुर्तगाली एशिया के महत्वपूर्ण व्यापारियों स्थलों या अड्डों (फितोरिया) पर कब्जा जमाकर अपनी नौसेना की वर्चस्वता को कायम रखना चाहते थे और उसका विकास करने के लिए कटिबद्ध थे। फितोरिया ऐसे व्यापारिक स्थल या अड्डे होते थे, जहाँ से नौसैनिक बेड़ों को सहायता भी प्रदान की जाती थी। पुर्तगालियों ने अपने पारसमुद्रीय फैलाव के लिए खासकर अफ्रीकी तट पर इसी प्रकार के अड्डों का इस्तेमाल किया। थोड़े ही दिनों में उन्होंने अनुभव किया कि भारत में इन अड्डों का कब्जा करना इतना आसान नहीं है और इसके लिए उन्हें संघर्ष करना होगा। जब कालिकट के राजा जामोरिन ने अपने बंदरगाह से मुसलमान व्यापारियों को हटाने से मना कर दिया, तब पुर्तगालियों ने वहाँ गोलाबारी की। इसके बाद पुर्तगालियों ने बड़ी चालाकी से कोचिन और कालिकट की दुश्मनी का फायदा उठाया और कोचिन के राजा के मालाबार क्षेत्र में पहला किला बनाया। 1509 ई. में पुर्तगालियों ने मिस्र के शासक ममलूक द्वारा भेजे गये जहाजी बेड़ों को पराजित कर दीव पर अधिकार जमा लिया। उन्होंने 1510 में गोवा पर कब्जा किया और अपना प्रशासनिक केन्द्र बनाया। स्पेनिश राजा चार्ल्स पंचम द्वारा हिंद महासागर में अपने हितों को छोड़ने और सुदूरपूर्व में फिलिपिन्स तक अपने को सीमित रखने की घोषणा के बाद पुर्तगाली पूर्वी समुद्री क्षेत्र के एकछत्र बादशाह हो गये और जिसे एस्तादो दा इंडिया के नाम से जाना गया।

सोलहवीं शताब्दी के आरंभ तक पुर्तगालियों का एशियाई व्यापार पर प्रभुत्व बना रहा। 1506 ई. में मसाले के लाभदायक व्यापार को राजा ने अपने अधीन कर लिया और दूसरी तरफ पुर्तगाली अपने अधिकार को सुरक्षित रखने के लिए जी जान से भिड़ पड़े। कभी-कभी व्यापार और लूट में अंतर करना मुश्किल हो जाता था। भारतीय जहाजों से

कई तरीके से पैसा वसूल किया जाता था, इनमें प्रमुख थी "काटेज व्यवस्था"। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भारतीय जहाजों के कप्तानों को गोवा के वायसराय से लाइसेंस या पास लेना पड़ता था। इसके बाद पुर्तगाली भारतीय जहाजों को नहीं छेड़ते थे, अन्यथा वे उसे लूट लेते थे। पुर्तगालियों के समुद्र पर वर्चस्व रहने का एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि मुगल बादशाहों ने कभी भी मजबूत नौसेना तैयार करने की कोशिश नहीं की। इसके अतिरिक्त सुदूर दक्षिणी क्षेत्र मुगलों के प्रत्यक्ष नियंत्रण से बाहर था और इसलिए भी पुर्तगालियों को पैर जमाने का मौका मिल गया। इस प्रकार पुर्तगालियों ने केवल मसाले के व्यापार से ही मुनाफा नहीं कमाया, बल्कि विभिन्न एशियाई देशों के बीच सामान ले जाने और ले आने के कार्य से भी लाभ कमाया। भारतीय कपड़े स्याम जाते थे, मलक्कर से लौंग चीन जाता था, फारसी कालीन भारत आते थे और तांबा तथा चाँदी जापान चीन को भेजता था।

## 7.5 पुर्तगाली साम्राज्य का पतन

सत्रहवीं शताब्दी के पहले दशक में पूरब में स्थापित पुर्तगाली साम्राज्य लगभग समाप्त हो गया और इसका स्थान डचों और अंग्रेजों ने ले लिया। इसके कई कारण थे। 1580 में पुर्तगाल स्पेन के राजा के साथ जुड़ गया और स्पेन के पतन के साथ-साथ इसका भी पतन हो गया। 1588 के नौसेना युद्ध में अंग्रेजों ने स्पेन को करारी हार दी। इसके बाद स्पेन की नौसेना शक्ति कमजोर हो गयी। पुर्तगाल के अंदरुनी मामलों ने भी उसकी स्थिति कमजोर की। समाज में कुलीन वर्ग का प्रभुत्व था और व्यापारियों का इतना सामाजिक प्रभाव नहीं था कि वे राज्य को अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रभावित कर सकें। राजा निरंकुश था। धर्म के मामले में पुर्तगाली असहिष्णु और धर्मांध थे और कई जगहों पर उन्होंने लोगों का जबरन धर्म परिवर्तन किया। इसके अतिरिक्त उनका फितोरिया मात्र एक व्यापारिक अड्डा था, जिसे क्षेत्रीय राज्य के रूप में बदलने की राजनीतिक इच्छा शक्ति नहीं दिखाई गयी। इसके अतिरिक्त पुर्तगालियों ने अपने को एकाधिकार व्यापार के मुनाफों तक ही सीमित रखा।

तीन शताब्दियों में पुर्तगालियों के पतन का अन्दाजा उन जहाजों की संख्या में होती कमी से लगाया जा सकता है, जो लिस्बन से गोआ के लिए चलते थे। इन जहाजों की संख्या 1500-49 में 451, 1700-1750 में 112 और 1750-80 में मात्र 70 थी।

अन्ततः उनका नियंत्रण कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया, मसलन उत्तरी अफ्रीका, दीव, दमन, गोवा (जहाँ 1961 में उनका वर्चस्व समाप्त हुआ), तिमोर और माकाओ (यहाँ अभी भी उनका नियंत्रण है)।

## 7.6 डचों का उदय

स्पेन का पतन होने के बाद पुर्तगाली शक्ति बिखर गयी और सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक डचों ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया। सोलहवीं शताब्दी से ही डच अपनी वाणिज्यिक और नौसैनिक शक्ति को बढ़ा रहे थे। वे पुर्तगालियों द्वारा लाये गये पूरब के सामान को लिस्बन से ऐंटवर्प पहुँचाया करते थे, जहाँ से वह यूरोप के बाजारों में पहुँचाया जाता था। डचों ने व्यापारिक संगठन और तकनीक और जहाजरानी में नये-नये प्रयोग किए। सत्रहवीं शताब्दी में उन्होंने फ्लूटशिप का निर्माण किया, जो अपने आप में एक अनोखा और अद्भुत जहाज था। यह फ्लूयित काफी हल्का था और इसे खेने के लिए कम लोगों की जरूरत पड़ती थी। इससे आने-जाने के खर्च में कटौती हुई। ये डच जहाज भारी और धीमी गति से चलने वाले पुर्तगाली जहाजों से श्रेष्ठ साबित हुए। डचों ने अपनी मातृभूमि नेदरलैंड से स्पेनवासियों को हटाने के लिए कड़ा संघर्ष किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय भावना के तहत भी पुर्तगालियों से मसाले का व्यापार छीनने का संकल्प किया।

6. भारतीय बंदरगाह पर सामान उतारते हुए यूरोपी नाविक

1602 ई. में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई और इसे युद्ध, संधि, इलाकों पर कब्जा करने और किला बनाने के अधिकार प्राप्त हो गये। आरंभ में डच इंडोनेशिया द्वीप समूह और मसाला उत्पादन करने वाले द्वीपों की ओर आकर्षित हुए, भारत की ओर नहीं शीघ्र ही उन्होंने अनुभव किया कि दक्षिण-पूर्व एशिया के व्यापार को बढ़ाते रहने के लिए भारत से व्यापार करना जरूरी है, क्योंकि वहाँ भारतीय कपड़ों की बहुत माँग थी। उस इलाके में कपड़े की माँग अधिक थी और भारत में काली मिर्च और मसालों की माँग थी। पश्चिमी भारत के गुजरात प्रदेश और पूर्व में कोरोमंडल तट पर बड़े पैमाने पर सूती कपड़े का उत्पादन होता था। हेंड्रिक ब्रोअर, जो बाद में पूरबी भारत के डच इलाकों का गवर्नर जनरल बना, कोरोमंडल को मोलक्कस का बांया हाथ कहा करता था। 1606 में डच गोलकुंडा के राजा से कारखाना स्थापित करने के लिए फरमान प्राप्त करने में सफल हो गये। और उन्होंने मसुलीपट्टम में अपना कारखाना स्थापित किया। धीरे-धीरे उन्होंने कोचिन, मद्रास में नागपट्टपम, सूरत, कैंबे, भड़ौच और पश्चिमी भारत में अपने व्यापारिक डिपो बनाए। बंगाल के चिन्सुरा, उत्तर प्रदेश के आगरा और बिहार के पटना में और भी कई व्यापारिक केन्द्र कायम किए गये।

उन्होंने कपड़े के अलावा, कच्चा रेशम, अफीम, शोरा, नील आदि वस्तुओं पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और इस प्रकार उन्होंने पुर्तगालियों द्वारा नियंत्रित अंतर-एशियाई व्यापार पर कब्जा कर लिया। पुर्तगालियों द्वारा नियंत्रित क्षेत्रों गोवा, मालाबार के कारखाने और श्रीलंका के साथ उनके दाल चीनी के व्यापार पर कई आक्रमण किए गये। व्यापार के दिनों में गोवा को चारों ओर से बंद कर दिया गया। 1641 में मलक्का पर कब्जा कर लिया गया, 1655-56 में कोलम्बो और 1659-63 में कोचिन पर कब्जा हो गया। इसके साथ डचों ने वस्तुतः पुर्तगालियों का वर्चस्व समाप्त कर दिया, पर अभी भी अंग्रेजों के रूप में उनका एक प्रतिद्वंद्वी बाकी था।

## 7.7 अंग्रेजों की सफलता

ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1600 ई. में हुई। एक आदेश पत्र के माध्यम से इसे केप

ऑफ गुड होप के पूरब में 15 सालों तक व्यापार करने का विशेषाधिकार प्रदान किया गया। वित्तीय दृष्टि से यह डच कंपनी की तुलना में छोटी कंपनी थी। अपनी पहली व्यापार-यात्रा में उसे डच कंपनी की तुलना में कम आमदनी हुई। इसके बावजूद अंग्रेजी कंपनी की एक विशेषता यह थी कि उसका संगठन बड़ा ही सहज था, इसमें 24 निदेशकों का समूह था, जिसका चुनाव प्रत्येक वर्ष शेयर होल्डर्स की आम सभा में होता था। आरंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना ध्यान मसाले के व्यापार, खासकर इंडोनेशिया से काली मिर्च और मसाला प्राप्त होने वाले द्वीप तक केन्द्रित रखा। प्रथम बारह वर्षों तक प्रत्येक साल इन्हें बीस प्रतिशत फायदा होता रहा। 1611 और 1615 के बीच कई यात्राओं में मूल निवेश पर 24% लाभ भी हुआ। जल्द ही अंग्रेजों ने भारत की वस्तुओं, खासकर कपड़े का महत्व समझा और वे उसका उपयोग मसाला खरीदने के लिए करने लगे। गुजरात में सूरत में कारखाना खोलने की योजना बनाई गई और कप्तान विलियम हौकिन्स को मुगल बादशाह जहांगीर के दरबार में भेजा गया। पुर्तगालियों के षडयंत्र के कारण हौकिन्स को आगरा से खाली हाथ लौटना पड़ा। अब अंग्रेजों के सामने यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मुगलों की सहायता लेने के लिए पुर्तगालियों से निपटना जरूरी है। 1611 ई. में सूरत के निकट स्वाली होल में उन्होंने पुर्तगालियों के जहाजी बेड़े को परास्त किया। इससे जहांगीर प्रभावित हुआ और उसने 1613 ई. में सूरत में स्थायी कारखाना स्थापित करने की अनुमति दे दी। इसके पहले 1611 ई. में मसुलीपट्टम में अंग्रेज एक कारखाना स्थापित कर चुके थे। बाद में पश्चिमी तट के अनेक स्थानों पर उन्हें कारखाना खोलने की अनुमति मिली।

सर थामस रॉ को मुगल दरबार में राजदूत के रूप में भेजा गया और अंग्रेजों ने विस्तार की नीति पर अमल किया। रॉ ने शाही सहायता प्राप्त करने के लिए अपने कूटनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया। इसके साथ-साथ उन्होंने पुर्तगालियों के जहाज को लूटना और नष्ट करना जारी रखा और भारतीय जहाजों से भारी हरजाना वसूल करते रहे। उन्होंने अपनी नीति के तहत चेतावनी, संधियों, षडयंत्र और आक्रमण का सहारा लिया। रॉ ने अपने प्रयत्नों से संपूर्ण मुगल प्रदेशों में व्यापार करने और कारखाना स्थापित करने का शाही फरमान प्राप्त किया। 1620 ई. के नौसेना युद्ध में अंग्रेजों ने पुर्तगालियों को परास्त किया और इसके बाद पुर्तगालियों का खतरा लगभग समाप्त हो गया। 1633 ई. में मुगल सेना ने बंगाल में हुगली से पुर्तगालियों को मार भगाया।

7. सूरत के बंदरगाह का एक दृश्य
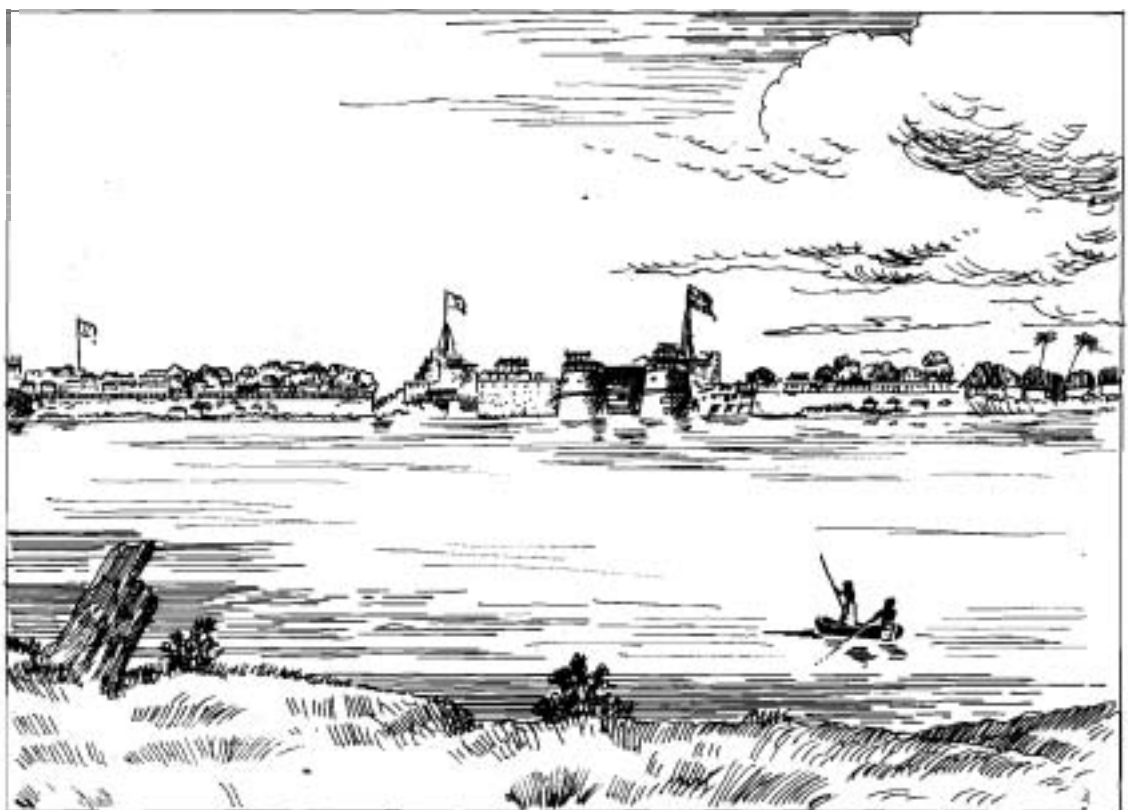
पुर्तगालियों के प्रभाव और शक्ति को समाप्त कर अंग्रेजों ने भारत के विभिन्न हिस्सों में कारखानों की स्थापना की। 1623 ई. तक सूरत और मसुलीपट्टम के अतिरिक्त भड़ोंच और अहमदाबाद में कारखाने खोले गए। इसके बाद कंपनी सुरक्षा की दृष्टि से इन बस्तियों की किलाबंदी के बारे में सोचने लगी। उन्होंने देशी राजाओं की बकाया राशि देने में भी टाल-मटोल की। उन्हें यह भुगतान उन स्थानीय व्यापारियों को करना पड़ता था, जो बिचौलिए के रूप में काम करते थे। अंग्रेज इन बिचौलियों द्वारा अर्जित लाभ पर भी अधिकार जमाना चाहते थे।

1625 ई. में अंग्रेजों ने सूरत की किलेबंदी की। इससे उनकी क्षेत्र विस्तार की और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा का पता चलता है। अभी हाल में ही, 1623 ई. में उन्हें डचों ने इंडोनेशिया द्वीप से मार भगाया था। इसके अतिरिक्त सूरत में अंग्रेजों को गिरफ्तार करके मुगल सत्ता ने अंग्रेजों को काफी निराश किया था। इसके बाद सीधे टकराव से बचने के लिए अंग्रेजों ने दक्षिण भारत के छोटो-छोटे राज्यों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। 1565 ई. में शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य का पतन होने के बाद कई छोटे-छोटे राज्य निर्मित हुए। 1639 में उन्होंने स्थानीय राजा से मद्रास को लीज पर ले लिया। मद्रास एक बंदरगाह था और अंग्रेजों ने राजा को आधा सीमा शुल्क देने का वादा किया। इसके बदले में उन्होंने किलेबंदी करने ओर अपना सिक्का जारी करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। अंग्रेजों ने वहाँ अपना कारखाना स्थापित किया और इसके चारों ओर सेंट जार्ज नामक किला बनाया। 1662 ई. में, इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी से शादी की और उसे दहेजस्वरूप बंबई प्राप्त हुआ। 1665 ई. में राजा ने यह इलाका कंपनी को सौंप दिया, जिसे शीघ्र किलाबंद कर दिया गया। मराठों से बढ़ते खतरे और अच्छा बंदरगाह होने के कारण बंबई ने शीघ्र सूरत का स्थान ले लिया और वह पश्चिमी तट पर कंपनी का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बन गया।

1630 के बाद पूर्वी भारत में इस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव तेजी से बढ़ा। 1633 ई. में उड़ीसा के बालासोर और 1651 ई. में बंगाल के हुगली में कारखाने स्थापित किए गए। बिहार में पटना और बंगाल में ढाका और कासिम बाजार में भी कई कारखाने खुले। 1658 ई. में बंगाल, बिहार, उड़ीसा और कोरोमंडल तट सेंट जार्ज किले के नियंत्रण में आ गए।

पूर्वी भारत में, कंपनी को अपने व्यापार के लिए माल, जैसे कपड़े का थान, सिल्क, चीनी और शोरा देश के अंदरुनी हिस्सों से लाना पड़ता था। इसके लिए उन्हें कई जगह चुंगी और सीमा शुल्क देना पड़ता था। कंपनी ने बराबर इन बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न किया। 1651, 1656 और 1672 में प्राप्त फरमानों से उन्हें इन बाधाओं से मुक्ति मिली। अब उन्हें कुछ नियत राशि भारतीय राजाओं को देनी पड़ती थी। 1680 ई. में मुगल बादशाह औरंगजेब ने कंपनी पर जज़िया कर लगाया और इसके बदले में कंपनी को सूरत को छोड़कर सभी सगह सीमा शुल्क रहित व्यापार करने की अनुमति दे दी। कहा जाता है कि इस कार्य के लिए कंपनी ने बतौर घूस 50,000 रु. मुगल पदाधिकारियों को दिया था।

इसके बावजूद स्थानीय सीमा शुल्क पदाधिकारियों की माँग रुकी नहीं। इसका कारण यह था कि कंपनी के पदाधिकारी अवैध रूप से निजी व्यापार किया करते थे। स्थानीय अधिकारियों और अंततः मुगल सरकार से अंग्रेजों का मनमुटाव बढ़ा और परिणामस्वरूप 1686-87 में बंगाल में स्थित अंग्रेजी कारखाने का अस्तित्व संकट में पड़ गया। उनके बंबई के किले को केवल चेतावनी दी गयी और सूरत, मसुलीपट्टम और विशाखापट्टनम स्थित कारखानों को बंद कर दिया गया। अंग्रेजों ने पुनः संधि का रास्ता अख्तियार किया और पुन उन्हें प्रतिवेदन देने पड़े, उन्होंने अपना आक्रामक रवैया बिल्कुल छोड़ दिया। मुगलों ने अंग्रेजों के व्यापार के आर्थिक पहलू के महत्व को समझते हुए उन्हें माफ कर दिया। यह व्यापार केवल भारतीय कारीगरों और व्यापारियों के लिए ही फायदेमंद नहीं था बल्कि इससे राज्य को राजस्व की प्राप्ति भी होती थी। अतः, औरंगजेब ने बतौर मुआवजा 15 लाख रुपये लेकर अंग्रेजों को पुनः व्यापार करने की अनुमति दे दी।

शीघ्र ही अंग्रेजों ने सुतानती में एक कारखाना स्थापित कर लिया और उन्हें इसे किलाबंद करने का एक बहाना भी मिल गया। 1696 में एक जमींदार शोभा सिंह ने बगावत कर दी। 1698 ई. में 1200 रुपये में कंपनी ने जमींदार अर्थात् राजस्व वसूलने का अधिकार खरीद लिया। इससे उन्हें सुतानती, गोबिंदपुर और कलिकत्ता गांव की जमींदारी मिल गई। 1700 ई. में बंगाल के कारखाने प्रेसिडेंट और काउंसिल अधिकार में आ गए, जिनका

FROM THE EAST INDIA COMPANY RECORDS AT FORT ST. GEORGE

8, We shall now proceed to give your Honours an account of the several occurrences and our transactions here since the departure of the *Hardwicke* and *Prince William* under the establish'd heeds, and as we go along shall also reply to your several favours received this year.

**FIRST, CONCERNING SHIPPING.**

4. The *Prince William* add *Hardwicke* sail'd from Fort St. David' the 9th February. Tbe 2d of that month the Deputy Governour and Council inclosed us a protest of Captain Langworth's, dated the 31st January, for detaining his ship in India beyond the time limited by charterparty. The 16th February we took notice to the Deputy Governour and Council, that we did not observe they bad taken any obligation from Captain Langworth that the surplus tonnage on the *Prince William* should be at half freight only, to which they replied the 28th that the confaaion and hurry they were in upon that ship's dispatch occasion'd them to forget it, for which they were sorry, but hoped your Honours would be no sufferers thereby.

Cons. 1741, Feb. 8 & 1. Lrs. recd., 1741, Nos. 1, 10, 21, 25. Lrs. sent, 1741, No. 21

6. Your Honour's ships arrived here, sail'd from hence, and now bound home, are as follows :—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| The *Carat* | ... | Captain Robert Cummings. | 7th February ... | Loading for England. |
| *Halifax* | ... | Captain John Blake ... | 5th Pane ... | Sail'd for ye Bay, 6th July. |
| *Nottingham* | ... | Captain Thomas Browne. | 13th Do. ... | Bound to England. |
| *Prince of Orange* | ... | Captain Charles Hudson. | 20th Do. ... | Sail'd for ye Bay, 3d July. |
| *London* | ... | Captain Matthew Bootle. | 1st July . | Sail'd for ye Bay, 14th July. |
| *King William* | ... | Captain James Sanders. | 18th July ... | } Sail'd for ye Bay, |
| *Beaufort* | ... | Captain Thomas Stevens. | 3rd August ... | } 23d August. |
| *Prince of Wales* | ... | Captain John Pelly Junior. | 19th August ... | Loading for England. |

6. It was in the evening of the 7th Febr'y that the *Caesar* arrived here, and as soon as the President knew what ship it was, he sent immediate advice thereof to Mr. Hubbard, but the *Hardwicke* and *Prince William* were out of sight before it reached him.

7. A French Jip having some little time before landed her treasure at Pondicherry, Mr. Dumas intercepted a letter from one of hia people advising the Morattae thereof and urging it as an inducement for them to order some of their troops thither. As we were unwilling at that juncture to give any wicked persons an opportunity to write such letters from hence, and beleiving the money very safe on board the *Cæsar* at that season of the year we continued it on board her till the 6th March, when we order'd it on shoar, it being near the approach of the southerly monsoon.

Lrs. from Eng. Cons. 1741, Feb. 8 & March 6.

8. Your Honours having advised us in your letter by the *Cæsar* that, in case ehe did not arrive here by the last of August, the Commander was order'd to make the best of hie way to Bengall, we demanded his reasons for coming here, which he deliver'd us the 19th March.

[Lrs. from Eng.] 2d Apr. 1740, para. 66. Cons. 1741, Feb. 19, March.

A DESPATCH SHOWING DEPARTURES OF SHIPS FROM INDIA TO ENGLAND

8. सेंट जार्ज के किले पर ईस्ट इंडिया कंपनी के दस्तावेज

मुख्यालय फोर्ट विलियम नामक किलेबंद बस्ती में था। कालिकत्ता नाम का अंग्रेजीकरण हुआ और इसका नाम कलकत्ता हो गया। इसके बाद यह बस्ती तेजी से विकसित हुई और 1735 ई. तक इसकी जनसंख्या एक लाख तक पहुँच गयी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया और अंग्रेजों ने इसका फायदा उठाते हुए कई छूटें और विशेषाधिकार प्राप्त किए। 1717 में बादशाह फर्रुखसियर ने एक शाही फरमान जारी किया, जिसके तहत कंपनी को कई विशेषाधिकार प्राप्त हुए।

i) कंपनी को बिना शुल्क दिए बंगाल में मुक्त रूप से व्यापार करने की छूट मिली। इसके बदले में कंपनी को प्रत्येक साल 30,000 रुपये देना था।

ii) कंपनी को कलकत्ता के आसपास के और इलाके राजस्व वसूली के लिए प्राप्त हुए।

iii) कंपनी ने हैदराबाद प्रांत के अपने पुराने विशेषाधिकार को बनाए रखा, जिसके अनुसार उस प्रदेश में उन्हें कर से छूट मिली हुई थी। मद्रास में उन्हें पहले से चली आ रही दर से ही राशि प्रदान करनी थी।

iv) 10,000 रुपये सालाना रकम देने के एवज में सूरत के सभी करों से उन्हें मुक्ति मिल गई।

v) बम्बई में ढाले गए कंपनी के सिक्के को पूरे मुगल साम्राज्य में वैधता प्राप्त हुई।

9. फर्रुखसियर का फरमान
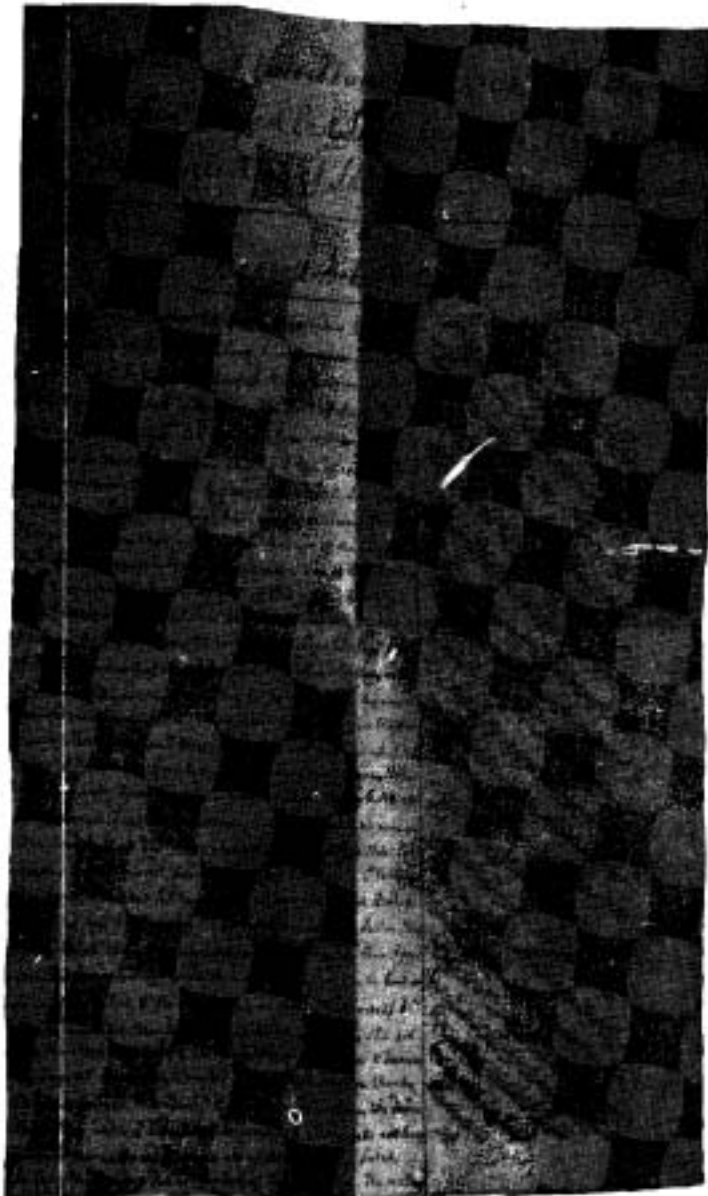
**बोध प्रश्न 1**

1) छोटे उत्तर लिखें।

क) पूंजीवादी बाजार का फैलाव क्यों चाहते थे?

z.......................................................................................

.........................................................................................

ख) यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों ने बड़ी संख्या में अफ्रीकी वासियों को दास के रूप में क्यों नियुक्त किया?

.........................................................................................

.........................................................................................

ग) हिन्दी महासागर में अरब व्यापारियों के एकाधिकार को समाप्त कर सबसे पहले किसने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाया?

.........................................................................................

.........................................................................................

घ) भारतीय व्यापार में डच व्यापारियों की रुचि क्यों थी?

.........................................................................................

.........................................................................................

ङ) मुगल बादशाह फर्रुखसियर से अंग्रेजों ने कौन-कौन से विशेषाधिकार प्राप्त किए?

.........................................................................................

.........................................................................................

2) सत्रहवीं शताब्दी के दौरान अंग्रेजी वाणिज्यिक केन्द्रों की स्थापना की प्रक्रिया पर प्रकाश डालें। (100 शब्दों में अपना उत्तर लिखें।)

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

.........................................................................................

## 7.8 पुर्तगालियों और डचों के साथ अंग्रेजों की दुश्मनी

अपने को सही ढंग से जमाने के लिए एक तरफ अंग्रेजी कंपनी को मुगल और भारतीय राज्यों से निपटना पड़ रहा था, दूसरी तरफ उन्हें पुर्तगालियों और डचों से भी लोहा लेना पड़ रहा था। हमने इस तथ्य का अध्ययन किया है कि किस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी के आरंभिक तीन दशकों में उन्हें पुर्तगालियों का सामना करना पड़ा था। 1630 ई. की मैड्रिड संधि के बाद अंग्रेजों और पुर्तगालियों की दुश्मनी समाप्त हुई। 1634 ई. में सूरत स्थित अंग्रेजी कारखाने के अध्यक्ष और गोवा स्थित पुर्तगाली वायसराय के बीच एक दूसरी संधि हुई, जिसके अनुसार भारत के वाणिज्यिक मामलों में दोनों देशों ने एक दूसरे की सहायता

करने का निश्चय किया। 1654 ई. में पुर्तगालियों ने पूर्व के व्यापार पर अंग्रेजों के अधिकार को स्वीकार कर लिया और 1661 की संधि के तहत भारत में डचों के खिलाफ वे दोनों एक हो गए।

इसी समय डचों ने मसाले के व्यापार से न केवल पुर्तगालियों को निष्कासित कर दिया था, बल्कि दक्षिण-पूर्वी एशिया से अंग्रेजों को भी मार भगाया था। हालाँकि डचों की रुचि मुख्यतः मसाला उत्पादक द्वीपों में थी, पर उन्होंने पुलिकट (1610), सूरत (1616), चिनसुरा (1653), कासिम बाजार, बरंगगोर, पटना, बालासोर, नागपट्टम (1659) और कोचिन (1663) में अपने कारखाने भी खोल रखे थे। डच अंग्रेजों की अपेक्षा सुरक्षित स्थिति में थे। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया पर अपना अधिकार जमा रखा था, अतः उन पर अंग्रेजों की तरह भारत में राज्य क्षेत्र हासिल करने का दबाव नहीं था। 1653-54 के बाद कई बार डचों और अंग्रेजों की दुश्मनी मुठभेड़ की स्थिति में पहुँच गयी। इसी समय डच जहाजी बेड़े स्वाली के निकट पहुँच गये और अंग्रेजों को सूरत में अपना कारोबार स्थगित करना पड़ा। 1667 में डच भारत में स्थापित अंग्रेजी अड्डों के छोड़ने के लिए राजी हो गए और अंग्रेजों ने इंडोनेशिया पर अपना दबाव छोड़ दिया। इस तरह दोनों प्रतिद्वंद्वी औपनिवेशिक शक्तियों ने आपस में समझौता कर लिया। इसके बावजूद अंग्रेज बराबर डचों को भारत भूमि से बाहर निकालने का प्रयत्न करते रहे और डचों ने देशी व्यापार तक अपने को सीमित कर लिया। डच अधिकारी अंग्रेज अधिकारियों के साथ मिलकर अपना निजी व्यापार करने लगे।

अठारहवीं शताब्दी में डचों का तेजी से पतन हुआ। अंग्रेजों के विशेषाधिकारों में वृद्धि हुई और उन्होंने नील, रेशम, कपड़ा, शोरा आदि के व्यापार पर अपना नियंत्रण सुदृढ़ कर लिया। 1759 में हुगली अभियान की सफलता के बाद डच नौसेना को गहरा आघात पहुँचा। अंततः, डचों ने 1795 में भारत में अपना अधिकार क्षेत्र भी खो दिया, जब अंग्रेजों ने उन्हें यहाँ से निकाल बाहर कर दिया। हालाँकि अठारहवीं शताब्दी के आरंभ से ही अंग्रेज सर्वोच्च शक्ति के रूप में उभर रहे थे, पर उन्हें अभी एक और ताकत से निबटना था। अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसियों ने अंग्रेजों का कसकर मुकाबला किया, पर अंततः उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेज ही विजयी हुए।

## 7.9 फ्रांसीसी औपनिवेशिक महत्वाकांक्षा

अन्य यूरोपीय कंपनियों के समान फ्रांसीसी कंपनी भी वाणिज्यिक गतिविधियों और विचारों की उपज थी। पूरब में फ्रांसीसी गतिविधि थोड़ी देर से शुरू हुई। भारतीय व्यापार क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए कॉलबर्ट ने 1664 ई. में कैम्पेग्ने डेस इंडेस ओरिएंटल्स (Compagnie des Indes Orientales) की स्थापना की। 1668 ई. में पहला फ्रांसीसी कारखाना सूरत में स्थापित हुआ। 1669 ई. में वे मसूलीपट्टम में भी कारखाना खोलने में सफल हुए। 1673 ई. में उन्हें अनुदान के रूप में पूर्वी तट पर पांडिचेरी गांव प्राप्त हुआ, जिसकी उन्होंने अच्छी तरह किलेबंदी की। 1674 ई. में उन्होंने बंगाल के शासक से कलकत्ता के निकट एक स्थान प्राप्त किया, जहाँ उन्होंने चन्दरनगर (1690-92) नामक शहर बसाया। हालाँकि 1665 ई. और 1695 ई. के बीच फ्रांसीसी कंपनी ने चौहत्तर सुसज्जित जहाज भारत भेजे थे, पर अंग्रेजों और डचों की तुलना में उनकी गतिविधि अभी भी बहुत कम थी। फ्रांसीसी कंपनी की वित्तीय स्थिति बहुत कमजोर थी, पर 1720 में इसके पुनर्गठन के बाद कंपनी की स्थिति बेहतर हुई। 1721 ई. में फ्रांसीसियों ने मॉरीशस पर कब्जा कर लिया। इससे उनकी नौसेना शक्ति में वृद्धि हुई और उन्होंने अंग्रेजों से मुकाबला करने के लिए शक्ति अर्जित की। 1725 में मालाबार तट पर और 1739 में कारिकाल में उन्होंने अपना पैर जमाया।

इसके बावजूद फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी डचों और अंग्रेजों के मुकाबले अपनी सरकार पर अधिक निर्भर थी। इसके पास मजबूत संगठन और पर्याप्त पूंजी का अभाव था। इसकी वाणिज्यिक गतिविधियों पर सरकार का हद से ज्यादा नियंत्रण था। इससे कंपनी की कार्यक्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ा। अतः इसकी नियति और विकास फ्रांस में हो रही गतिविधियों पर काफी कुछ निर्भर था। इसके अलावा अठारहवीं शताब्दी का फ्रांसीसी समाज अपने समकालीन अंग्रेजी समाज की तुलना में कम सक्रिय था। इसके पहले वाली

इकाई में हम दोनों देशों के ऐतिहासिक विकास को देख चुके हैं।

इसका मतलब यह नहीं कि ईस्ट इंडिया कंपनी को किसी गतिरोध का सामना ही नहीं करना पड़ा। कंपनी को अपनी स्थापना के समय से ही इंग्लैंड में हो रही आलोचना और प्रतिद्वंद्वियों का सामना करना पड़ा था। पूर्व के व्यापार पर एकाधिकार बनाए रखने के लिए इसे लगातार राजा को घूस और कर्ज देना पड़ा था। इसके बावजूद कई व्यापारी और घुसपैठिए (कंपनी के अनुसार) एशिया के साथ व्यापार करते रहे। 1690 ई. में उन्होंने भारत के व्यापार को "मुक्त" करने के लिए संसद में याचिका दायर की। अपने एकाधिकार को सुरक्षित रखने के लिए कंपनी को 90,000 खर्च करने पड़े, जिसमें 10,000 उन्होंने बतौर घूस राजा को दिया। अंततः 1702 में दोनों दलों ने साथ मिलकर काम करने का फैसला किया, जो कार्ल मार्क्स के शब्दों में "ईस्ट इंडिया कंपनी की असली शुरुआत" थी। इसके तहत ब्रिटिश व्यापारियों के व्यापक हितों का प्रतिनिधित्व हुआ, जिसे संसद का समर्थन प्राप्त था।
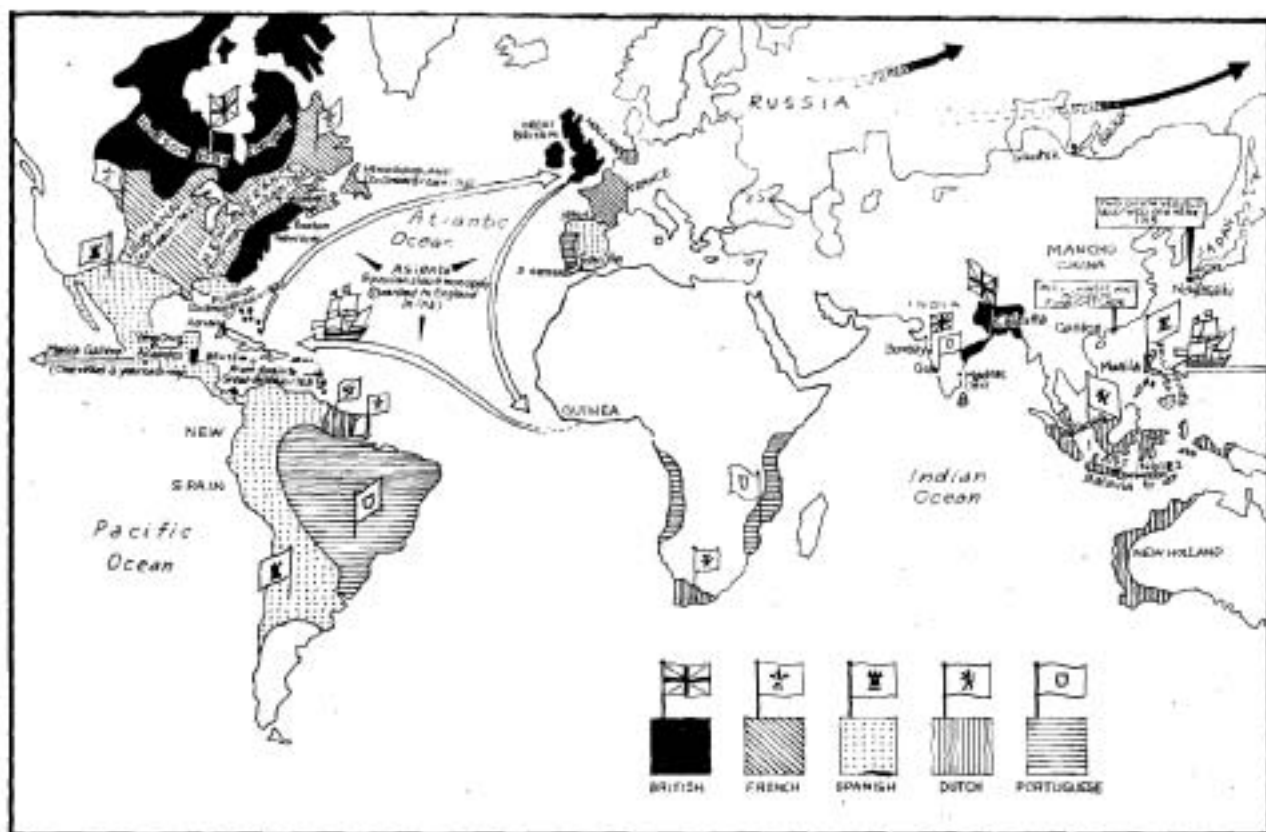
10. विभिन्न यूरोपीय शक्तियों के अधिकार क्षेत्र (18वीं शताब्दी के आसपास)

## 7.10 यूरोपिय व्यापार की संरचना और तरीके

जब यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों ने भारत से व्यापार करना शुरू किया तो उनके सामने एक ही समस्या थी कि भारत से लाए गये सामान के बदले भारत को किस चीज की आपूर्ति की जाए। लगभग तीन शताब्दियों तक उन्हें इस समस्या से जूझना पड़ा और इसमें इन्हें वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और व्यापार संतुलन एशिया के पक्ष में बना रहा। यूरोप के जहाज अपने देशों से थोड़ी बहुत मात्रा में शराब और तेल लाते थे। तब सवाल यह है कि उनका कारोबार कैसे चलता था? हम इस बात की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं कि सोलहवीं शताब्दी में दक्षिण अमेरिका की खानों से सोना और चाँदी निकालकर यूरोप को समृद्ध किया गया। इसी जमा राशि का उपयोग उन्होंने, थोड़ी हिचक

के साथ ही सही, पूर्व से आयातित वस्तुओं को खरीदने के लिए किया। हालाँकि सटीक आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, पर ईस्ट इंडिया कम्पनी के निर्यात संबंधी विवरणों से इसका अनुमान लगाया जा सकता है। 1660 और 1669 के बीच यूरोप से पूर्व को निर्यातित सामानों में 66% हिस्सा सोने और चाँदी का था। 1680-89 के बीच यह प्रतिशत बढ़कर 87 तक पहुंच गया। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजों ने 270 लाख मूल्य का सोना भारत भेजा, जबकि अन्य वस्तुओं की कीमत 70 लाख थी। परन्तु अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में औद्योगिक क्रांति शुरू होने के साथ स्थिति पलटना शुरू हो गयी। 1760 और 1809 के बीच 140 लाख मूल्य की चाँदी निर्यातित की गयी जबकि अन्य वस्तुओं का निर्यात 485 लाख तक बढ़ गया।

वाणिज्यवादी नीति के अनुसार बुलियन का निर्यात किसी देश की अर्थव्यवस्था और समृद्धि के लिए बुरा होता है। यूरोपीय कम्पनी बुलियन का निर्यात कर रही थी, इस कारण से उनकी बहुत आलोचना हो रही थी। अतः इस दौरान यूरोपीय कम्पनियां पूरब की वस्तुओ के बदले कुछ दूसरी चीज देने का विकल्प ढूंढ रही थी। अन्तर-एशियाई व्यापार पर कब्जा करके इस समस्या का आंशिक समाधान किया गया। यूरोपीय व्यापारी मसालों के द्वीप से लौंग और जापान से तांबा भारत और चीन तक पहुंचाते थे। भारतीय सूती वस्त्र दक्षिण-पूर्व एशिया पहुंचाते थे और फारसी कालीन भारत तक पहुंचाते थे। इस प्रकार भारत की वस्तुओं से विनिमय के लिए कम्पनी को कुछ वस्तुएँ प्राप्त हो गयीं। इसके बावजूद, अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही अंग्रेजी व्यापारी घाटे की समस्या का समाधान कर सके। यह घाटा उन्होंने बंगाल के राजस्व पर अधिकार करके और चीन को अफीम निर्यात करके पूरा किया।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय कम्पनियाँ एशिया से लाई गयी वस्तुओं को यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका महाद्वीप और मध्य पूर्व के बाजारों में बेच कर मुनाफा कमाते थे। यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका के बीच त्रिकोणीय व्यापार आरंभ हुआ। यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियाँ अमेरिका के बागानों के लिए दासों की नियुक्ति करती थी और ये दास अफ्रीका के पश्चिमी तट से लाये जाते थे। इस पृष्ठभूमि में पूरब के साथ व्यापार आगे बढ़ा।

हमने देखा है कि आरंभ से ही यूरोपीय बाजारों में मसाले की माँग सबसे अधिक थी। सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में काली मिर्च का व्यापार अपने उत्कर्ष पर था। हालांकि, सत्रहवीं शताब्दी का अंत होते-होते व्यापार में दूसरी वस्तुओं का महत्व भी बढ़ा। मसाले के स्थान पर कपड़ा, रेशम और शोरा का महत्व तेजी से बढ़ा। सत्रहवीं शताब्दी के दूसरे दशक से अंग्रेजी और डच कम्पनियों में भारतीय वस्त्रों की माँग बढ़ गयी।

हमने पहले भी देखा कि एशिया के दूसरे देशों में भारतीय कपड़ों की माँग बहुत थी और इसका उपयोग विनिमय वस्तु के रूप में किया जाता था। भारतीय कपड़े अपनी विविधता, उत्कृष्टता, प्रकार और डिज़ाइन के लिए प्रसिद्ध थे। गुजरात, कोरोमंडल और बंगाल में तरह-तरह के कपड़ों का उत्पादन होता था। यूरोप, अफ्रीका और वेस्ट इंडीज के बाजारों में भारतीय रेशम और मलमल (मोटे और परिष्कृत दोनों प्रकार के) की बहुत माँग थी। 1614 ई. में अंग्रेजी कम्पनी ने सूरत से 12,000 थान की माँग की। 1664 ई. में कम्पनी ने 750,000 थान कपड़े का आयात किया, जो कुल निर्यात की गयी राशि का 73 प्रतिशत था। इस शताब्दी के अंतिम दशक तक यह प्रतिशत बढ़कर 83 हो गया। इस समय यूरोप के उच्च वर्गों के बीच बंगाल के मलमल और कोरोमंडल के कपड़े की माँग काफी अधिक थी। इस बढ़ते हुए आयात से अंग्रेजी उत्पादक घबरा उठे और उन्होंने भारतीय वस्त्रों के आयात पर प्रतिबंध लगाने के लिए राजनीतिक दबाव डाला। इसके परिणामस्वरूप 1700, 1721 और पुनः 1735 में संरक्षणवादी कानून बने। इसके अलावा सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोपीय बाजार में कच्चे रेशम की माँग भी बढ़ी।

इन वस्तुओं के अलावा फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने शोरे का भी आयात किया। इसका उपयोग बारूद बनाने के लिए किया जाता था। एक महत्वपूर्ण कच्चा माल होने के साथ शोरे का उपयोग जहाज को संतुलित करने के लिए भी किया जाता था। शोरा वजन में भारी होता था, अतः उसका उपयोग इस रूप में कर लिया जाता था। इस समय पटना शोरे के प्रमुख व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरा। इसके अतिरिक्त नील का भी आयात किया जाने लगा। कपड़ों को रंगने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। यह परंपरागत तरीके (यूरोप में एक प्रकार की लकड़ी का उपयोग कपड़ों को रंगने के लिए किया जाता था) से काफी सस्ता और आसान था।

FROM THE EAST COMPANY RECORDS AT FORT ST. GEORGE

**REGISTER OF DIAMONDS, PRECIOUS STONES, &CA.**

Licenced by the President and Council of Fort St. George to be shipped on the *Prince of Wales*, Captain John Pelly Junior, by the following persons in return for coral and on other accounts :—

By Randall Fowke, consign'd to Judah Supino and Son or order :—

| | £ | s. | d. | Pap. | fns. | a. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| One bulse of diamonds, value nine hundred and fifty three pags., thirty three [sic] fanams, and seventy six cash, or... ... ... ... In full returns for a box of coral beads imported anno 1741, per *Cæsar*. | 871 | 10 | 6 | 958 | 80 | 76 |
| [ , . . ] bulse of diamondr, value two thousand one hundred and ninety six pagodas, seven fanams and forty two cash or ... ... In full returns for a box of coral bead; imported anno 1741, per *Cæsar*. | 841 | 17 | 7 | 9,196 | 7 | 42 |
| By Nicolas Morse consign'd to Judah Supino & Son or order :— | | | | | | |
| One bulse of diamondr, value eight hundred and one pagodas, two fanams and twenty cash, or ... In full returns for a case of coral beads imported auno 1741, per *Cæsar*. | 807 | £ | 6 | 801 | 2 | 20 |
| By Nicolas Morse and Rawson Hart consigned to David DeCastro or order :— | | | | | | |
| One bulse of diamonds, vdue six hundred and forty nine pagodas, eleven fanams end twenty cash or In full returns for ono case of coral beads imported anno 1741, per *Cæsar*. | 243 | 18 | 0 | 649 | 11 | 20 |

A SPECIMEN ORDER OF PRECIOUS STONES TO BE PAID FOR CORAL BEADS.

---

*Letters to Fort St.* George, *1684–85*

---

P.S. In regard y': before my Invoices may reach yo': hands if the Sloops should meet wth: a quick passage, I thought convenient to give yon ye: numbers of the Cloth as well as the Sorts Laden on Each of them Viz': on Sloop Royall James 90 Bales.

L. C. B. N° : 6 Bales 40 Long cloth blue.
S. A. O. N° : 3 Bales 10 : Salampores ordinary.
B. E. T. N° : 25 Bales 8 }
29 Bales 5 } Betteeloes.
25 Bales 7 }
L. C. O. N° : 2 Bales 10 Long cloth ordinary.
P. E. R. O. N° : 1 Bales 8 Percullaes ordinary.
2 Bales 7 : ditto :
On Sloop William 122 Balee.
L. C. B. N° 6 Bales 52 Long cloth blue.
L. C. O. N° 2 Bales 50 Long Cloth ordny :
N° 1 Bales 10 ditto.
B. E. T. N° 26 Bales 10 Betteeloes.

Bales... 122 R: I:

A SPECIMEN ORDER OF CLOTH EXPORTED FROM INDIA BY AN EAST INDIA COMPANY MERCHANT.
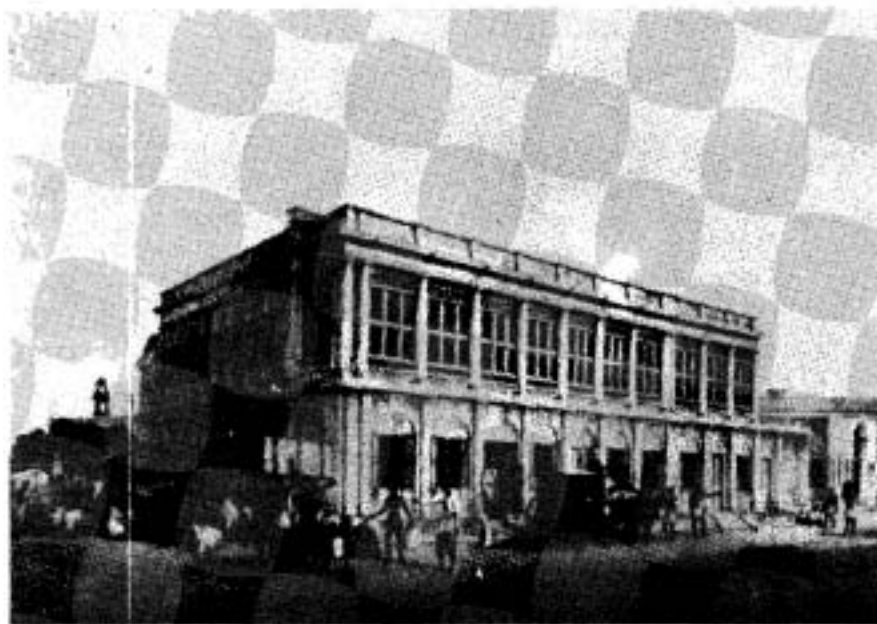
12. व्यापार भवन, मद्रास

## 7.11 भारत पर कब्जा जमाने का प्रयत्न

अठारहवीं शताब्दी के आरंभ होते-होते अंग्रेज और फ्रांसीसी कम्पनियों ने अपने व्यापार को मुनाफे की स्थिति में पहुंचा दिया था। ब्रिटिश केंद्रों की स्थापना के कारण बम्बई और कलकत्ता समृद्ध शहर बन गये। इन केंद्रों में भारतीय पूंजी, निपुणता और व्यापारियों का जमाव शुरू हुआ। इसके साथ-साथ इन केंद्रों की जनसंख्या में भी वृद्धि हुई।

1744 ई. में बम्बई की जनसंख्या 70,000 थी और इस शताब्दी के मध्य में कलकत्ता की जनसंख्या दो लाख और मद्रास की तीन लाख थी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन और शक्तियों का विकेंद्रीकरण होने से कई छोटे राज्य निर्मित हुए। अंग्रेजी और फ्रांसीसी कम्पनियों को भारत में अपने लिए एक राजनीतिक और क्षेत्रीय भविष्य नजर आया। यूरोप और उत्तरी अमेरिकी उपनिवेशों में फ्रांस और इंग्लैंड एक दूसरे के दुश्मन और प्रतिद्वंद्वी थे। भारत एक समृद्ध उपनिवेश था। अत: 1740 के दशक में आंग्ल फ्रेंच टक्कर शुरू हुई और अंतत: अंग्रेजों की जीत हुई। अंग्रेजों ने 1757 के प्लासी युद्ध के बाद से भारत पर कब्जा जमाना शुरू किया। अगले भाग में हम इंग्लैंड की अंदरूनी अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तन और इसके फलस्वरूप कम विकसित देशों के साथ उनके संबंध पर पड़ने वाले प्रभाव का जिक्र करेंगे। इसके साथ यूरोपीय साम्राज्य के बदलते स्वरूप पर भी हम बातचीत करेंगे।

## 7.12 औद्योगिक पूंजीवाद और साम्राज्यवाद

18वीं शताब्दी के मध्य से औद्योगिक क्रांति ने न केवल इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था को परिवर्तित कर दिया बल्कि उसके विदेश व्यापार के तरीके और उपनिवेशों से संबंधों पर भी असर डाला। इंग्लैंड का उत्पादक उद्योग जैसे-जैसे विकसित होता गया, उत्पादित वस्तुओं की आयात की आवश्यकता वैसे-वैसे कम होती गयी। इसके अतिरिक्त एक समय ऐसा आ गया जब इंग्लैंड के उत्पाद न केवल घरेलू जरूरतों को पूरा करने लगे, बल्कि निर्यात के लिए भी रास्ता ढूंढने लगे। आरंभ में निर्यात यूरोप के बाजारों तक सीमित था, पर जैसे-जैसे यूरोप के अन्य देशों का औद्योगीकरण होता गया, वैसे-वैसे अंग्रेजी वस्तुओं की माँग समाप्त हो गयी। अत: अब कम अविकसित और आधुनिक औद्योगीकरण से रहित उपनिवेशों को बाजार के रूप में विकसित किया गया। अब ये देश कृषीय वस्तुओं का

निर्यात और तैयार औद्योगिक वस्तुओं का आयात करने लगे। इंग्लैंड (और बाद में, पश्चिमी यूरोप के अन्य औद्योगीकृत राष्ट्र) को अठारहवीं शताब्दी के अंत तक बेहतर तकनीक प्राप्त हो गयी, जिसके सहारे वे कम दाम में अधिक उत्पादन करने लगे। उपनिवेशों में सीमा शुल्क न देकर और अधीनस्थ राज्यों की अर्थव्यवस्था को अपनी मुट्ठी में कर इंग्लैंड ने अपने उत्पादों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भारत है। 18वीं शताब्दी का भारत तैयार कपड़े का बहुत बड़ा केंद्र और निर्यातक था, 19वीं शताब्दी आते-आते उसे इंग्लैंड में तैयार कपड़े पर निर्भर बना दिया गया और वह कपड़े का आयात करने लगा। आप इसी पाठ्यक्रम के खंड 4 में इस इतिहास का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

औद्योगिक पूंजीवादी के विकास से यूरोपीय अर्थव्यवस्था परिवर्तित हुई, अतः यूरोपीय साम्राज्यवाद के स्वरूप में भी बदलाव आया। व्यापारिक पूंजीवादियों का ध्येय था भारत जैसे देश के माल को यूरोप के बाजारों तक पहुंचाना और मुनाफा कमाना। इस व्यापार में उनकी प्राथमिकता केवल यह थी कि बुलियन कम से कम देना पड़े और वस्तु विनिमय से ही काम चल जाये। औद्योगिक पूंजीवादी भारत जैसे देशों को अपने निर्मित माल का बाजार और अपने उद्योग के लिए कच्चे माल का स्रोत बनाने में रुचि रखते थे। वे चाहते थे कि ये देश उनके तैयार माल की खपत करें और कृषीय वस्तुओं, खासकर उद्योग के लिए कच्चे माल का निर्यात करें। जहाँ तक भारत का संबंध है 19वीं शताब्दी के आरंभिक दशक से ही यह बदलाव दृष्टिगोचर होने लगा था और नयी साम्राज्यवादी नीति स्पष्ट हो गयी थी।

इंग्लैंड और भारत के बीच व्यापार के तरीके (मसलन वस्तुओं के आयात-निर्यात और व्यापार की दिशा) में ही परिवर्तन नहीं हुआ बल्कि उन नीतियों में भी हुआ जिसने इन दोनों देशों के राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को निर्धारित किया। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी के पास भारत के साथ व्यापार करने का एकाधिकार प्राप्त था। इनमें से कुछ निजी व्यापारी ईस्ट इंडिया कम्पनी के एकाधिकार के बावजूद 18वीं शताब्दी में भी व्यक्तिगत तौर पर व्यापार करते थे पर कम्पनी के एकाधिकार के कारण भारत में अंग्रेजी पूंजी के पूर्ण उपयोग में बाधा पड़ रही थी। एडम स्मिथ (वेल्थ ऑफ नेशन्स, 1776) और अन्य व्यापारिक गुटों ने कम्पनी के एकाधिकार का जमकर विरोध किया और 1813 ई. में भारत के व्यापार से कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हो गया। इसके बाद 1833 में चीन के साथ व्यापार में भी ईस्ट इंडिया कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हो गया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के ये अधिकार चार्टर अधिनियम द्वारा समाप्त किए गये। इसके तहत संसद द्वारा कम्पनी के एकाधिकार चार्टर का समय-समय पर अवलोकन किया जाता था और कानून पारित किया जाता था। एक तरफ इंग्लैंड ने यह अधिनियम पारित किया और दूसरी तरफ भारत में इंग्लैंड का राजनीतिक प्रभुत्व बढ़ रहा था। इन दोनों तत्वों के योग से 19वीं शताब्दी के आरंभ से इंग्लैंड के व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। कभी ब्रिटिश व्यापार ने ब्रिटिश राजनीति का सहारा लिया और कभी राजनीति ने व्यापार का, पर दोनों ने परस्पर एक दूसरे को सुदृढ़ करते हुए भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना की।

13. भारत में ब्रिटेन के लिए धन की निकासी को दर्शाता हुआ चित्र
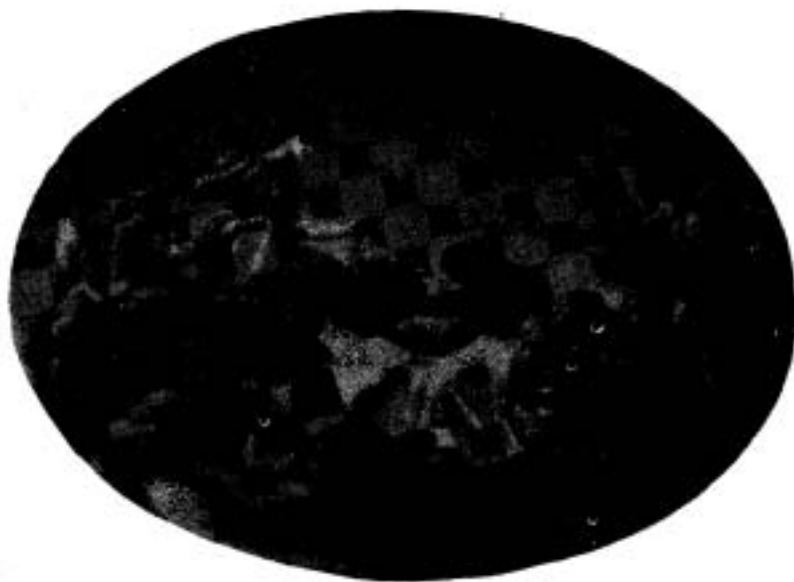
1) इस काल के प्रमुख व्यापारिक बंदरगाहों का जिक्र करें।

.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................

2) भारत से अन्य देशों को भेजे जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ कौन-कौन सी थीं?

.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................

3) सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय कम्पनी के भारत के साथ होने वाले व्यापार में हुए परिवर्तनों का उल्लेख करें। (उत्तर 100 शब्दों में दें।)

.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................

4) व्यापारिक पूंजीवाद और औद्योगिक पूंजीवाद में क्या अंतर था? इससे निर्यात व्यापार में क्या बदलाव आया?

.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................
.................................................................................................................

## 7.13 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि यूरोप में व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि होने के फलस्वरूप औपनिवेशिक शक्तियों ने नये बाजारों और कच्चे माल के स्रोतों की खोज आरंभ की। एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के विभिन्न देशों के बाजार के रूप में विकसित होने की पूरी संभावना थी। इसके अतिरिक्त इन देशों में कच्चे माल का अगाध स्रोत छिपा पड़ा था। ये देश औपनिवेशिक शक्तियों के लिए बहुत उपयोगी थे। निर्यात व्यापार करने के उद्देश्य से यूरोप में कई व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित हुईं। जल्द ही हितों के टकराव के कारण पुर्तगालियों, डचों, फ्रांसीसियों और अंग्रेजों जैसी यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गयी। इस संघर्ष में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी विजयी हुई और उसने भारतीय व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित किया। इंग्लैंड में वाणिज्य के स्थान पर औद्योगिक पूंजीवाद के आ जाने से इंग्लैंड के निर्यात व्यापार के स्वरूप और तरीके में भी बदलाव आया।

## 7.14 शब्दावली

**फरमान** : बादशाह द्वारा जारी आदेश।

**व्यापार संतुलन** : पारसमुद्रीय व्यापार में आयात और निर्यात का अंतर।

## 7.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) क) देखें भाग 7.1
   ख) देखें भाग 7.3
   ग) देखें भाग 7.4
   8) देखें भाग 7.6
   ङ) देखें भाग 7.7

2) अपने उत्तर में इन तथ्यों को शामिल करें : मुगल दरबार में अंग्रेज प्रतिनिधि का आना, व्यापार के लिए फरमान की प्राप्ति, सूरत, मद्रास, बम्बई, उड़ीसा, बंगाल आदि में अंग्रेजी कारखानों की स्थापना। देखें भाग 7.7

**बोध प्रश्न 2**

1) अपनी जानकारी का इस्तेमाल करते हुए इस प्रश्न का उत्तर दें।

2) देखें भाग 7.6, 7.7, 7.10

3) इस उत्तर में आप मसाले के व्यापार, कपड़ा, रेशम और शोरा, जिसने बाद में मसाले के व्यापार का स्थान ले लिया, आरंभ में यूरोपीय व्यापारी पूरब से सामान खरीदने के लिए सोने और चाँदी का उपयोग करते थे, औद्योगिक क्रांति के बाद व्यापार का ढर्रा बिल्कुल बदल गया। देखें भाग 7.10

4) व्यापारिक उद्योगपतियों ने भारत में उत्पादित वस्तुओं के निर्यात को बढ़ाया, जबकि औद्योगिक पूंजीपतियों ने इंग्लैंड में तैयार माल को भारत में आयातित किया। देखें भाग 7.12